National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 712-716

"काष्ठ कला उद्योग में दस्तकारों की आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन" : जनपद सहारनपुर (पश्चिमी उ0प्र0) के सन्दर्भ में

डॉ0 शनव्वर
असि0 प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), राजकीय महाविद्यालय, चुड़ियाला, भगवानपुर, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत।

सारांश
सहारनपुर का काष्ठ कला उद्योग लकड़ी की निकासी के लि देश ओर विदेशो में अपनी पहिचान बनाए हुए है। यह उद्योग कुटीर उद्योग पर आधारित हैं। काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारो के द्वारा लकड़ी पर अपनी हुनरबाजी के माध्यम से 500–600 करोड़ का वार्षिक कारोबार करते हैं परन्तु वुडकार्विग उद्योग से जुड़े निर्यातको की माने तो बिजली एवं कच्चे माल की आपुर्ति में कमी के कारण समय पर काष्ठ कला से जुड़ी निर्मित वस्तुओं की मांग को पूरा न करने के कारण निर्यात घटने लगा हैं। दस्तकार एवं उनके परिवार रोजी–रोटी के संकट को दुर करने के लिए जयपुर, जोधपुर, हैदराबाद, होशियारपुर एवं दक्षिणी भारत के शहरो की ओर पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं। सरकार को यदि इस उद्योग में लगे दस्तकारो के रोजगार को सुरक्षित रहना है तो आर्थिक पैकेज के साथ–साथ बिजली, स्वास्थ सेवा एवं कच्चे माल की आपुर्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं तथा साथ ही साथ काष्ठ कला उद्योग को जी0एस0टी0 से बाहर रखना होगा।

मूल शब्द : काष्ठ कला, दस्तकार, आंकड़े, याद्दच्छिकत् पारिश्रमिक।

प्रस्तावना
भारत का काष्ठ कला उद्योग शताब्दियों से गाँवों, कस्बों के साथ–साथ शहरो तक की अर्थव्यवस्था का अंग रहा हैं। यह एक श्रम प्रधान उद्योग है जिसमें कम पूंजी के निवेश से बड़ी मात्रा में रोजगार सृजित होता हैं इस प्रकार से काष्ठ कला क्षेंत्र रोजगार प्रदान करने की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण क्षेंत्र हैं। काष्ठ कला उत्पादों के निर्यात के द्वारा भारत को विदेशों से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती हैं। इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख विशेषता यह हैं कि उच्च निर्यात सम्भाव्यता वाले इस उद्योग के लिए सामन्य तथा किसी भी प्रकार के कच्चे माल या मशीनी उपकरणों की विदेशों से आवश्यकता नही पड़ती है। काष्ठ कला उद्योग की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसमे कार्य करने वाले दस्तकारो (श्रमिकों) के लिए उच्च स्तरीय व्यक्तिगत कौशल एवं दक्षता की आवश्यकता होती हैं परन्तु इसके उपरान्त भी काष्ठ कला उद्योग में कार्य करने वाले दस्तकार औपचारिक रूप से किसी प्रशिक्षण संस्थान में अपने व्यवसायें से सम्बन्धित कार्यो का प्रशिक्षण अथवा शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक नही हैं। काष्ठ कला उद्योंग से जुड़े व्यवसाय में पारिवारिक आधार पर पीढ़ी दर पीढ़ी उत्तरोत्तर हस्तान्तरित होते रहते हैं जिसमें बच्चे अपने वरिष्ठ परिवारजनों के साथ कार्य करत हुए परिपक्व एवं कुशल दस्तकार बन जाते है।
देश के विभिन्न भागों में बसे दस्तकारों द्वारा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल, लकड़ी आदि से ही घरो में काम आने वाली अनेक वस्तुओं, बर्तन, पलंग, चौखट–दरवाजे, फर्नीचर, मूर्तिया, खिलौने, एवं सजावट की वस्तुओं का निर्माण किया जाता हैं। काष्ठ कला उद्योग में बनी वस्तुओं को आकर्षक रूप प्रदान करने में दस्तकारों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही हैं। जीविकोपार्जन के साधन के रूप में प्रारम्भ हुआ काष्ठ कला उद्योग कब धनाढ्य एवं कुलीन वर्ग की पसन्द बन गया इसका लेख जोखा तो उपलब्ध नही हैं लेकिन विदेशी आक्रांताओं की कुटिल नीतियों के झंझावतों को झेलते हुए इस उद्योग ने अपनी पहिचान बनाए रखी है तो वह निःसन्देह इससे जुड़े दस्तकारों की मेहनत एवं पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को सहेज कर रखने की दृढ़ इच्छा शक्ति का ही परिणाम है। हालांकि हमारे काष्ठ कला उद्योग को आज आधुनिक वस्त्र उधोग, प्लास्टिक उद्योग स्टील उद्योग, प्लास्टिक फर्नीचर उद्योग आदि से बड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। उत्पादों की जटिलता, बाजार तन्त्र से विलगता, नई प्रौद्यागिकी दस्तकारी व्यवसायों का परम्परागत तौर पर विशिष्ट जातियों व खास समूहों तक सीमित रहना, कम मजदुरी दर के चलते कुशलतम दस्तकारो के बच्चों का पारिवारिक व्यवसायों के प्रति लगाव न होना जैसी अनेक चुनौतियों के उपरान्त भी यह उद्योग विकास कर रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद सहारनपुर (पश्चिमी उ0 प्र0) के काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य
1. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का आय के आधार पर अध्ययन करना।
2. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का उपभोग के आधार पर अध्ययन करना।
3. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का बचत के आधार पर अध्ययन करना।
4. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का रोजगार की प्रकृति के आधार पर अध्ययन करना।
5. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का प्रशिक्षण के आधार पर अध्ययन करना।
6. काष्ठ कला उद्योग में कार्यशील दस्तकारों का प्रतिदिन कार्य करने के समय (घंटो) के आधार पर अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र
जनपद सहारनपुर, गंगा यमुना के दोआब में स्थित होने के कारण कृषि की दृष्टि से उन्नत हैं। जनपद सहारनुर का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 363791 हैक्टेअर हैं। चावल, गेहूं, गन्ना, आलू यहां की

प्रमुख फसल हैं। जनपद सहारनपुर की जनगणना 2011 के अनुसार जनसंख्या 3466282 हैं जबकि साक्षरता दर 70.55 प्रतिशत है। जनगणना 2011 के अनुसार यहां कुल श्रमशक्ति 1037344 हैं। सहारनपुर की श्रमशक्ति मुख्य रुप से संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में विभाजित है। जनपद सहारनपुर का औद्योगिक क्षेत्र 5 क्षेत्रों में, दिल्ली रोड़, सहारनपुर, पिलखनी, देवबन्द, अम्बेहटा एवं तीतरों में विभाजित है। वर्ष 2012–13 के अनुसार यहां 211 वृहद, 814 लद्यु एवं 40 ग्रामोंद्योग स्थापित हैं। जनपद सहारनपुर में कागज, सिगरेट, चीनी, दवाई एवं काष्ठ कला आधारित उद्योग मुख्य रुप से स्थापित हैं।

शोध प्रविधिः प्रस्तुत शोध कामकाजी महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्व तथा उनकी आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया गया। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक संमको का प्रयोग निम्न शोध प्रविधि के आधार पर किया गया है।
समंक संकलन के लिए औद्योगिक इकाइयों का चयन– समंक संकलन के लिए जनपद सहारनपुर के सरकारी औद्योगिक क्षेत्रों एवं निजी क्षेत्रों में स्थापित 8 काष्ठ कला उद्योगो का चयन याद्दच्छिकृत् विधि के द्वारा किया गया जहां पर कार्यशील दस्तकारों की अधिकता पायी गयी। चयनित काष्ठ कला उद्योग निम्न प्रकार से हैं–

तलिका 1: न्यायदर्श के लिय चयनित काष्ठ कला उद्योग

क्र0 सं0	काष्ठ कला उद्योग	पता
1.	मै0 वूड क्रियेशन	गुलशन–ए–फरेद कलोनी सहारनपुर
2.	मै0 मरगूब एण्ड़ बर्दस	निकट इस्लामिया इण्टर कॉलेज, सहारनपुर
3.	मै0 इन्टीरियर डेकोरेशन एण्ड हैण्डी0	इब्राहिम कलोनी, सहारनपुर
4.	मै0 बी0 आर0 आर0 एम्पोर्टस,	हबीबगढ़, सहारनपुर
5.	मै0 वूड आर्ट	ईदगाह रोड़, सहारनपुर
6.	मै0 सप्त हैण्ड़ी क्राफ्ट	इण्ड़0 स्टेट, दिल्ली रोड़, सहारनपुर
7.	मै0 गोयल क्राफ्ट हाउस	इण्ड़0 स्टेट, दिल्ली रोड़, सहारनपुर
8.	मै0 मुगल आर्ट	वर्धमान कलोनी, सहारनपुर

स्रोत– श्रम कार्यालय, सहारनपुर

आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित चरो का चयन

(अ) आय :– विभिन्न आय–वर्ग दस्तकारो की आर्थिक स्थिति भिन्न–भिन्न होती हैं। अधिक आय प्राप्त करने वाले दस्तकारो की आर्थिक स्थिति, निम्न आय–वर्ग महिलाओं की अपेक्षा उच्च होती हैं। इसलिए शोध अध्ययन में अलग–अलग आय–वर्ग के दस्तकारो को चयन किया गया है।

(ब) उपभोग व्यय :– दस्तकारो एवं उनके परिवार द्वारा प्रतिमाह कितना उपभोग व्यय किया जाता इसका प्रभाव दस्तकारो एवं उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पर पड़ता हैं। इसलिए शोध अध्ययन में अलग–अलग उपभोग व्यय करने वाले दस्तकारो का चयन किया गया है।

(स) बचत :– उच्च स्तर की बचत करने वाले दस्तकारो की आर्थिक स्थिति कम बचत करने वाली दस्तकारो से भिन्न होती हैं। इसलिए शोध अध्ययन में अलग–अलग बचत करने वाली दस्तकारो का चयन किया गया है।

(द) रोजगार की प्रकृति :– स्थाई रोजगार प्राप्त दस्तकारो की आर्थिक स्थिति अस्थाई दस्तकारो की अपेक्षा उच्च होती हैं। इसलिए दोनों प्रकार की दस्तकारो का चयन किया गया है।

(य) प्रशिक्षण :– प्रशिक्षित दस्तकारो की आर्थिक स्थिति अप्रशिक्षित दस्तकारो की अपेक्षा उच्च होती हैं क्योकि प्रशिक्षित दस्तकारो को उच्च प्रकृति का कार्य दिया जाता हैं। उच्च कार्य के बदले इन दस्तकारो को उच्च पारिश्रमिक नियोक्ता द्वारा दिया जाता हैं। इसलिए दोनों प्रकार के दस्तकारो का चयन करने किया गया है।

(र) प्रतिदिन कार्य करने के घण्टे :– जो दस्तकार प्रतिदिन अधिक घण्टे कार्य करते हैं। इन दस्तकारो की आर्थिक स्थिति कम घण्टे काम करने वाले दस्तकारो से अलग होती हैं। शोध के लिए दोनों ही प्रकार के दस्तकारो का चयन किया गया।

अध्ययन हेतू संमको का चुनाव

अध्ययन के लिए चयनित 8 काष्ठ कला उद्योगो 50 दस्तकारो से अनुसूची के माध्यम से व्यक्तिगत आधार पर पुछे गए प्रश्नों के आकड़ों का संकलन किया गया।
प्राथमिक संमको को परिपूरक करने के उद्देश्य से विभिन्न सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थाओं एवं इन्टननेट वैबसाइट आदि स्रोतो से द्वितीयक संमको को संकलित कर उनका शोध अध्ययन में यथास्थान पर उचित प्रयोग किया गया।
उपरोक्त चरों पर विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली/अनुसूची तैयार की गयी जिसमें प्रश्नों का समावेश किया गया। शोधकर्ता स्वयं व्यक्तिगत रूप से विभिन्न न्यायदर्शो से मिला एवं अनुसूची के द्वारा आकड़े/सूचनाएं एकत्रित की गयी। अनुसूची से प्राप्त आकड़ो को व्यवस्थित किया गया। इसके उपरान्त व्यवस्थित एवं सन्तुलित आकड़ों को तालिका एवं ग्राफ द्वारा प्रदर्शित करते हुए उद्देश्यों के अनुरूप विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष का समर्थन करने वाले घटकों को चिन्हित किया गया।

(अ) आय के आधार पर दस्तकारों का वर्गीकरण–

तलिका 2

आय प्रतिमाह (रू0)	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
3000 से कम	03	06
3000–5000	11	22
5000–7000	16	32
7000से अधिक	20	40
योग	50	100

स्रोत– प्राथमिक संमक

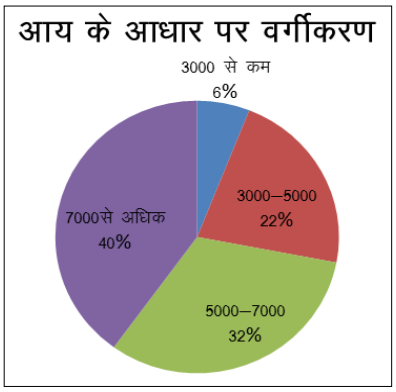

अकीर्ति 1

तालिका संख्या 2 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील दस्तकारों की आय का प्रतिशत सबसे अधिक 40 है जिनकी आय प्रतिमाह 7000 रू0 से अधिक हैं। सबसे कम 06 प्रतिशत 3000 रू0 से कम आय प्राप्त करते हैं।

(ब) उपभोग व्यय के आधार पर दस्तकारो का वर्गीकरण–

तलिका 3

उपभोग प्रतिमाह व्यय (रू0)	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
3000 से कम	05	10
3000–5000	16	32
5000–7000	21	42
7000से अधिक	08	16
योग	50	100

स्रोत– प्राथमिक संमक

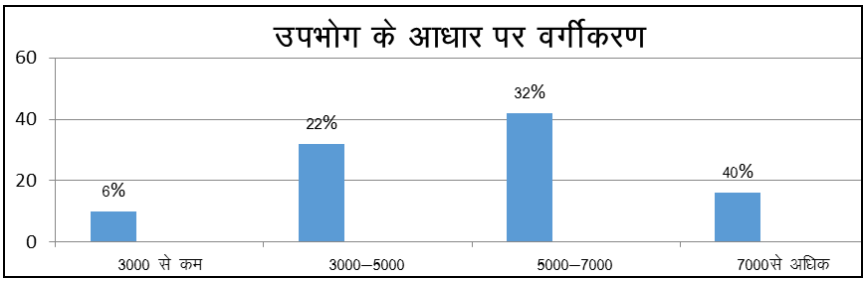

अकीर्ति 2

तालिका संख्या 3 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील दस्तकारों का उपभोग व्यय के आधार पर प्रतिशत सबसे अधिक 42 है जिनका प्रतिमाह उपभोग व्यय 5000–7000 रू0 से अधिक हैं। सबसे कम 10 प्रतिशत दस्तकार 3000 रू0 से कम उपभोग पर प्रतिमाह व्यय करते हैं।

(स) बचत के आधार पर दस्तकारों का वर्गीकरण

तलिका 4

बचत प्रति माह (रू0)	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
1000 से कम	10	20
1000–2000	13	26
2000–3000	17	34
3000से अधिक	20	40
योग	50	100

स्रोत–प्राथमिक संमक

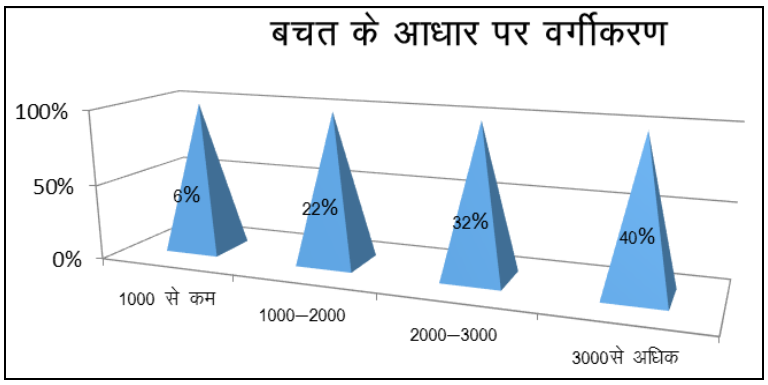

अकीर्ति 3

तालिका संख्या 4 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील दस्तकारों की बचत का प्रतिशत सबसे अधिक 40 है जिनकी प्रतिमाह बचत 3000 रू0 से अधिक हैं। सबसे कम 20 प्रतिशत दस्तकार प्रतिमाह 1000 रू0 से कम बचत करते हैं।

(द) रोजगार की प्रकृति के आधार पर दस्तकारो का वर्गीकरण–

तलिका 5

रोजगार की प्रकृति	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
स्थाई	02	04
अस्थाई	48	96
योग	50	100

स्रोत– प्राथमिक संमक

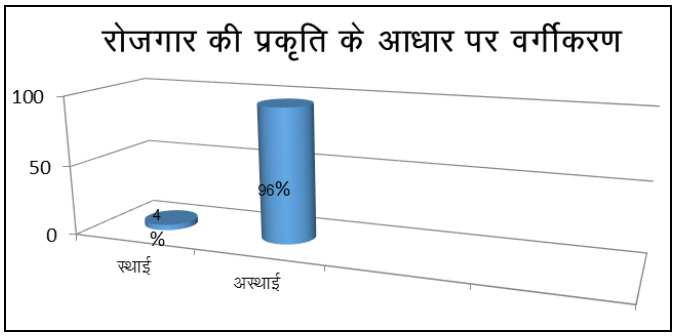

अकीर्ति 4

तालिका संख्या 5 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील 04 प्रतिशत दस्तकारों को स्थाई रोजगार मिला है जबकि 96 प्रतिशत दस्तकार अस्थाई रोजगार में लगे हुए है।

(य) प्रशिक्षण के आधार पर दस्तकारो का वर्गीकरण

तलिका 6

प्रशिक्षण	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
प्रशिक्षित	22	44
अप्रशिक्षित	28	56
योग	50	100

स्रोत– प्राथमिक संमक

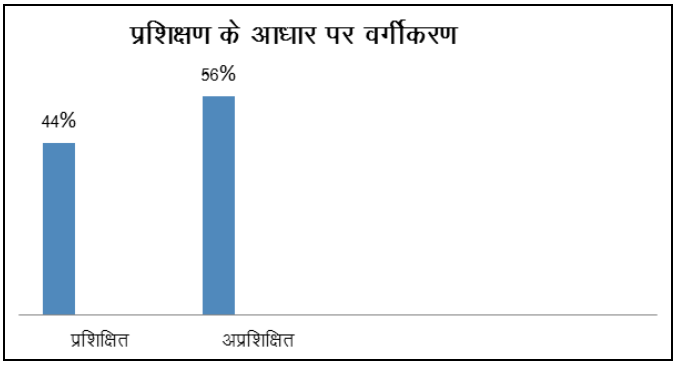

अकीर्ति 5

तालिका संख्या 6 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील 44 प्रतिशत दस्तकार प्रशिक्षित है जबकि 56 प्रतिशत दस्तकार अप्रशिक्षित है।

(र) कार्य करने के समय के आधार पर दस्तकारो का वर्गीकरण–

तलिका 7

प्रतिदिन कार्य करने का समय	दस्तकारों की संख्या	प्रतिशत
8 घंटो से कम	11	22
8–10 घंटे	31	62
10 घंटो से अधिक	08	16
योग	50	100

स्रोत– प्राथमिक संमक

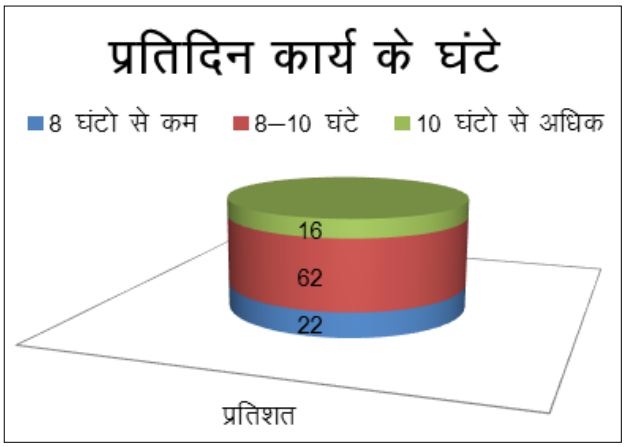

अकीर्ति 5

तालिका संख्या 7 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जनपद सहारनपुर के काष्ठ कला उद्योगों में कार्यशील दस्तकारों का प्रतिदिन कार्य करने के घंटे के आधार पर 62 प्रतिशत सबसे अधिक है जो प्रतिदिन 8 से 10 घंटे के बीच कार्य करते है। 22 प्रतिशत दस्तकार 8 घंटे या इससे कम कार्य करते है जबकि 16 प्रतिशत दस्तकार 10 घंटे से अधिक कार्य करते है।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि अधिकांश दस्तकार ठेके प्रणाली के अर्न्तगत रोजगार में लगे हुए है जो लगभग 8 से 10 घन्टे प्रतिदिन कार्य करते हैं। इन दस्तकारो को समय पर पारिश्रमिक का भुगतान न होना एक प्रमुख समस्या है तथा निर्मित काष्ठ कला वस्तुओं की मांग में कमी के कारण दस्तकारो एवं परिवार के सामने आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। अधिकांश रूप से दस्तकार पलायन करने को विवश हो रहे है। आज इस उद्योग में कुशल एवं प्रशिक्षित दस्तकारो की संख्या में कमी आने लगी है। इस उद्योग से जुड़े दस्तकारो के लिए श्रम कल्याण की भी कोई महत्वपूर्ण योजना नही है।

सरकार को यदि इस उद्योग में कार्यशील दस्तकारो के रोजगार को बचाना हैं तो आर्थिक पैकेज के साथ–साथ बिजली, स्वास्थ एवं कच्चे माल की आपुर्ति के लिए व्यवस्था करनी होगी तथा दुसरी ओर देश के महानगरो में विशुद्ध रूप काष्ठ कला द्वारा निर्मित वस्तुओं के विक्रय करने हेतु प्रभावी विपणन तन्त्र को विकसित करना होगा जिसमें दस्तकार अपने उत्पादों को सीधे ग्राहकों को बेच सके। रहन–सहन, फैशन, एवं रूचियों के अनुरूप दस्तकारो को

समय–समय पर प्रशिक्षण देने की भी आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, उमेश चन्द, (2008), "ग्रामींण रोजगार में हस्तशिल्प उद्योग का योगदान", कुरूक्षेत्र, अंक 4, फरवरी, पृष्ठ 13–17
2. श्रीवास्तव, रत्ना, (2016), "समय के साथ बदलता भारतीय हैंडीक्राफ्ट", योजना, अंक 10, अक्टूबर, पृष्ठ 51
3. झा, प्रवीण, (2017), "भारत में श्रम परिदृश्य" योजना, अंक 4, अप्रैल, पृष्ठ 9–11
4. श्रीजा, ए0, (2017), "भारत में असंगठित श्रम बाजार" योजना, अप्रैल, पृष्ठ 17–19
5. भारत (2017), सूचना एवं प्रकाशन मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 605
6. www.google.com